ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2015; 1(3): 164-165
www.allresearchjournal.com
Received: 25-12-2014
Accepted: 27-01-2015

Dr. Sunita Kumari
Assistant Professor,
Department of AI & As,
Ancient History, Sanjay Singh Yadav College Gaya, Bihar, India

Corresponding Author:
Dr. Sunita Kumari
Assistant Professor,
Department of AI & As,
Ancient History, Sanjay Singh Yadav College Gaya, Bihar, India

बौद्ध धर्म में पर्यावरण की अवधारणा

Dr. Sunita Kumari

प्रस्तावना:

पर्यावरण का अर्थ है हमारे चारों ओर का संसार। पारिस्थितिकी वनस्पतियों, जैविक प्राणियों और मानव के साथ पर्यावरण का सम्बन्ध स्थापित करता है। पर्यावरण शब्द दो शब्दो के योग से बना है परि + आवरण – पर्यावरण ''परि'' का अर्थ होता है 'चारो ओर' तथा ''आवरण'' का अर्थ है ''ढके हुए।'' इस तरह पर्यावरण का अर्थ उन सभी दिशाओं से है जो किसी भौतिक अथवा अभौतिक वस्तु को चारो ओर से घेर हुए है। सभी जीवित वस्तु असंख्य दशाओं से घिरी है और अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए उन सभी दशाओं से अनुकूलन करने की आवश्कयता होती है। इस तरह वे सभी दशाएँ जो एक प्राणी के अस्तित्व के लिए आवश्यक है तथा चारो ओर से घेरे हुए है, उसका पर्यावरण कहलाती है। पर्यावरण की परिभाषा देते हुए रॉस ने लिखा है कि पर्यावरण कोई भी वह बाहरी शक्ति है, जो हमको प्रभावित करती है।1 पर्यावरण का प्रभाव सभी प्राणियों के कार्यो, विचारों और गतिविधियों पर पड़ता है प्रसिद्ध समाजशास्त्री मैकाइवर एवं पेज के अनुसासामाजिक गुण जैसे मनोवृत्तियाँ, विश्वास और नैतिकता मानव के पर्यावरण से प्रभावित होते है।[2] पर्यावरण को दो भागों में बाँटा जा सकता है, वे इस प्रकार है – भौतिक पक्ष एवं जैविक पक्ष। भौतिक पर्यावरण के अन्तर्गत सम्पूर्ण प्राकृतिक शक्तियों का अध्ययन किया जाता है – भूमि, जल तथा वायु। जैविक पर्यावरण के अन्तर्गत पेड़–पौधे, जानवर और मानवीय शक्तियों का अध्ययन किया जाता है।

पर्यावरण शब्द जीवो की अनुक्रिया को प्रभावित करने वाली समस्त भौतिक तथा जैविक परिस्थितियों का योग है। दूसरी रतह से हम इसे जीव मंडल भी कह कहते है, जो जल–मंडल, स्थल–मंडल एवं वायुमंडल के जीवनयुक्त भागों का योग है। जीवमंडल के विभिन्न भागों के सम्बन्ध में कहा जा सकता है कि वायु, जल, नभ, थल आदि में अनेक प्रकार के प्राणी तथा पादप प्रद्रव्य विचरण करते है, जबकि यह सत्य है कि वायुमंडल का कोई निश्चित लक्षण तथा स्थायी निवास नही होता। जलमंडल में लवणीय तथा अलवणीय दो जैविक चक्र तथा स्थल–मंडल में केवल एक जैविक चक्र होता है।

ईसा पूर्व छठी शताब्दी में जब भगवान् बुद्ध का प्रादुर्भाव हुआ। उस समय मुख्य समस्या आन्तरिक पर्यावरण की थी। धार्मिक एवं दार्शनिक जगत में बुराईयों का भगवान ने अतिथियों के रूप में देखा, अत्यधिक कामसेवन एवं कठोर तपस्या के त्यागपूर्वक आर्य अष्टांगिक मार्ग की शिक्षा की गयी। शाश्वतवाद एवं अच्छेदवाद के विचारो को त्याग के साथ प्रतीत्वसमुत्पाद के मनन करने की सलाह दी गई।

भगवान् बुद्ध के जीवन के सम्बन्धिता मुख्य घटनाओं भी बौद्ध धर्म में पर्यावरण के प्रति जागरूकता को निर्दिष्ट करती है जैसे कि तथागत का जन्म कपिलवस्तु के लुम्बिनी नामक स्थान पर वृक्ष के नीचे हुआ। भगवान बुद्ध को बोधि वृक्ष के नीचे ज्ञान की प्राप्ति हुई। प्रथम उपदेश तथागत ने सारनाथ मृगदाव में प्राकृतिक वातावरण में दिया। तथागत का परिनिर्वाण भी बोधिवृक्ष के नीचे कुशीनगर मे हुआ।

बौद्ध धर्म एवं पर्यावरण से सम्बन्धित बातों का ज्ञान हम बौद्ध धर्म से सम्बन्धित ग्रन्थों से होता है। महायान के प्रसिद्ध ग्रन्थ ललितविस्तार के धर्मालोकमुख परिवर्त में कहा गया है कि भगवान् तुषित लोक से इस संसार में अवतरित होने के लिए आतुर दिखाई पड़ते है। देवेताओं ने उनके जन्मविषयक वातवरण और लक्षणों को भविष्यवाणी की। बोधिसत्व के जन्म के समय को देखकर राजा शुद्धोदन के श्रेष्ठ घर में आठ पूर्व निमित्त प्रकट हुए जिससे राजप्रसाद अत्यन्त रमणीय हो गया, पक्षियों कलरव करने लगी, सभी लताएँ हरी–भरी, फूलों–फलों से सुसज्जित हो गई, सभी तालाब फूलों से युक्त हो गया है।[3] बोधिसत्व के जन्म परिवर्त में कहा गया है कि दस महीनों बीतने के पश्चात जब बोधिसत्व के जन्म की शुभ बेला आयी, उस समय राजा शुद्धोदन के घर तथा उपवन की सभी लताओं में कलियाँ लग गई, तालाबें में उत्पल कुमुद,

पदम तथा पुण्डरीको में मुकुल लग गये, आठ रत्न वृक्ष प्रकट हुए अन्तःपुर में रत्नों के अंकुर उत्पन्न हो गये।[4] बोधिसत्व के गर्भधारण से लेकर जन्म के समय तक प्रकृति स्वच्छ वातावरण उपस्थापित कर बोधिसत्व के जन्म में सहयोग प्रदान किया। बौद्ध ग्रन्थों एवं पालि त्रिपिटक में बुद्ध एवं पर्यावरण से सम्बन्धित अनेक विवरण प्रस्तुत किये है। इनमें बुद्ध ने पेड़–पौधे, पशु–पक्षियों एवं मानव के कल्याण हेतु अनेक धार्मिक उपदेश दिये है। बुद्ध ने पशु–पक्षियों, पेड़–पौधों के साथ मैत्रीपूर्ण व्यवहार करने का उपदेश दिया है, जिससे वातावरण स्वच्छ बना रहे।

विनयपिटक में बुद्ध ने भिक्षुओं को सम्बोधित करते हुए कहा है कि तृण एवं वृक्ष आदि के गिरने में पाचित्तिय का दोष लगता है।5 पहले शाक्यपुत्र एवं भिक्षु वर्षाकाल में भी विचरण करते थे जिसे देखकर लोग हैरान रहते थे कैसे शाक्यपुत्र भ्रमण कर हरे–तृणो को मर्दन करते हुए वनस्पति को कष्ट देते हुए बहुत से छोटे–छोटे समुदायों को मारकर वर्षाकाल मे विचरण करते है। उन भिक्षुओं ने ये सारी बातों को भगवान् बुद्ध से कहा, इन सारी बातों से अवगत होने के पश्चात तथागत ने भिक्षुओ को आमंत्रित करते हुए कहा है कि ''भिक्षुओं! अनुमति देता हूँ वर्षवास करने की।[6] वर्षाऋतु के समाप्त होने पर सभी भिक्षु अपना उद्धार व्यक्ति करते हुए कहते है, ''नई वर्षा से सिक्त हो पर्वतों पर वृक्ष लहराते है। यह ऋतु एकान्त अरज्ज में मेरे मन को अधिकाधिक स्फूर्ति प्रदान करती है।''[7] महाकाश्यप भिक्षु को भी वन एवं पर्वत से बहुत लगाव था, वे कहते है कि ''वरना के पेड़ों की पंक्तियों से विस्तृण रूप से भरे, मनोरम भूमि भागवाले कुंजरो से युक्त रमणीय पर्वत मुझे प्रिय हैं। ऋषियों से सेवित, मोरो के शब्दो से सदा आनन्दित वे पूर्व मुझे प्रिय है। स्वच्छ जल विस्तृत शिलाएँ जो लंगुरो और मृगों से भरे है, जहाँ शैवाल से आच्छादित जलाशय है, वे पर्वत मुझे प्रिय है।''[8]

बौद्ध धर्म को अपनाने वाले शासको ने भी पर्यावरण के संतुलन हेतु अनेक कार्य किये। इनमें सबसे प्रतिष्ठित शासक सम्राट अशोक थे, जिन्होने कलिंग युद्ध के पश्चात बौद्ध धर्म को अपनाया तथा अहिंसा का रास्ता अपनाया। अशोक ने बौद्ध धर्म को अपनाने के पश्चात जीव–हत्या पर रोक लगा दी तथा पर्यावरण को स्वच्छ तथा शान्तिमय बनाने हेतु बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य किये। अशोक द्वारा किये गये कार्यो का विवरण हमें उसके शिलालेखो के माध्यम से ज्ञात होता है। अशोक के प्रथम शिलालेखों में प्राणि हिंसा पर रोक लगाने हेतु कहा है कि ''पहले देवो के राजा प्रियदर्शी की पाकशाला में प्रतिदिन कई लाख प्राणी सूप के लिए मारे जाते थे। परन्तु आज जब यह धर्मलिपि लिखवायी गई है, तब से सूप के लिए तीन प्राणी मारे जो है, दो मोर और एक मृग। ये तीन प्राणी भी बाद में नही मारे जायेगें।[9] सम्राट अशोक के दूसरे शिलालेख में दो प्रकार की चिकित्सा अर्थात मनुष्यों एवं पशुओं की चिकित्सा का प्रबन्ध किया गया है। मनुष्यों एवं पशुओं के लिए उपयोगी औषधियाँ जहाँ–जहाँ नही है, वहाँ–वहाँ लोकर लगवाई गई। मार्गो में मनुष्यों एवं पशुओं के सुख–सुविधा के लिए कुएँ खुदवाये गये और वृक्षारोपण किया गया।[10] सम्राट अशोक ने अपने पाँचवें स्तम्भ लेख में वन्य–प्राणियों के वध एवं वनों के काटने पर रोक लगा दी। अशोक ने बौद्ध धर्म से प्रभावित होकर अंहिसा के मार्ग को अपनाने के साथ–साथ पर्यावरण को स्वच्छ बनाये रखने में अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया।

वर्तमान समय में पर्यावरण का संरक्षण अत्यन्त आवश्यक है, तभी पारिस्थितिकी संतुलन बनाये रखा जा सकता है। इसके लिए अधिक से अधिक वृक्षारोपण करना चाहिए तथा जंगल एवं पेड–पौधो को काटने से रोकने की आवश्यकता है। वनों के संरक्षण हेतु राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रयास किये जा रहे है। 1972 ई भारत ने WWF को स्वीकृति प्रदान कर भारत में पर्यावरण संरक्षण हेतु विविध विकास के कार्यो का आयोजन किया है। प्रत्येक वर्ष 4 अक्टूबर को विश्व पशु–कल्याण दिवस एवं 6 अक्टूबर को विश्व वन्य प्राणी दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस प्रकार हम कह सकते है कि बौद्ध धर्म पर्यावरण को स्वच्छ एवं निर्मल बनाने में अपनी एक अद्वितीय स्थान रखता है। गौतम बुद्ध ने अष्टांगिक मार्ग, चार आर्यसत्य एवं वर्षावास के माध्यम से वातावरण एवं मनुष्य के बीच एक संतुलन बनाने का महत्वपूर्ण मार्ग प्रशस्त किया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Environment is only external foce which in fluencies us- E.J. Ross, Society and social problems, P68.
2. Maciver and page, Society, P. 80
3. ललितविस्तार, धर्मालोकमुख परिवर्तत पृ० 108] First, Edition Edite dby Dr. P.Z. Vaidya
4. ललितविसतार, जन्म परिवर्त, पृ० 171, 172
5. विनयपटिक, राहुल सांकत्यायन, बुद्धा शिक्षा केन्द्र पाचित्तय–2, पृ० 56–58
6. विनयपिटक, राहुल सांकृत्ययान, बुद्ध शिक्षा केन्द्र, वर्षापनायिका –स्कन्ध, पृ० 167
7. थेरगाथ, (हिन्दी अनुवाद) गाथा पृ० 110
8. थेरगाथा संख्या 1070, 1075
9. भारतीय पुरालेखों का अध्ययन, डॉ० शिवस्वरूप सहाय, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, तृतीय संस्करण 2000, पृ० 91
10. वहीं, पृ० 92